'ढाई आखर प्रेम' - राष्ट्रीय सांस्कृतिक जत्था

प्रेम, एकजुटता एवं आपसी सद्भाव की यात्रा

ढाई आखर प्रेम
National Cultural Jatha

प्रिय दोस्तों,

हम समान विचारधारा वाले प्रगतिशील सांस्कृतिक संगठन आपको 'ढाई आखर प्रेम' नामक हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक अभियान में आमंत्रित कर रहे हैं। यह एक राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक जत्था (पैदलयात्रा) है, जो 28 सितंबर, 2023 (भगत सिंह की जयंती) को अलवर, राजस्थान से शुरू हो रही है। यह देश के 22 राज्यों की यात्रा करेगी और 30 जनवरी, 2024 (महात्मा गांधी का शहीद दिवस) को दिल्ली में समाप्त होगी। यह जत्था आपसी प्रेम, शांति और सौहार्द का उत्सव है जो दुनिया में व्याप्त नफ़रत और अविश्वास की भावना के जवाब में हम संस्कृतिकर्मियों और जिम्मेदार नागरिकों की एक जरूरी पहल है।

इस जत्था के रास्ते में मिलने वाले लोगों के सम्मान में हम गीत गाएंगे, नृत्य करेंगे, नाटक प्रस्तुत करेंगे, हथकरघा से बनी चीजें लोगों से साझा करेंगे जिन्हें आज लोग विस्मृत कर चुके हैं, अपनी माटी में रंगे प्रेम के धागों को बुनने और बांटने वाले समाज सुधारकों, संतो, कलाकारों, लोक कलाकारों, कवियों और आजादी के दीवानों को याद करते उनके जन्म और कर्मस्थली जाएंगे। 'ढाई आखर प्रेम' जत्था गंगा-जमुनी तहज़ीब की उष्मा से भरा स्वतंत्रता, समता, न्याय और एकजुटता को फिर से पाने और जीने की कोशिश के साथ इसे पुनः समाज में स्थापित करने का प्रयास है, जिसे नफरत, विभाजन, अहंकार और पहचान की वर्तमान राजनीति ने बड़ी क्रूरता से कमजोर कर दिया है।

'ढाई आखर प्रेम' यात्रा में हम सभी प्रगतिशील सामाजिक, सांस्कृतिक संगठनों, कलाकारों, कवियों, लेखकों, संगीतकारों, बुद्धिजीवियों, सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण कार्यकर्ताओं के साथ आम जन को भी इस सामूहिक अभियान में सहभागिता के लिए आवाज दे रहे हैं, आमंत्रित कर रहे हैं। आप हमारे दोस्त, सहयोगी और सहयात्री के रूप में इस राष्ट्रीय अभियान में सहज ही समान रूप से शामिल हो सकते हैं, हम आपका दिल से स्वागत करते हैं।

जत्था के दैनिक पड़ावों की सूची

- **28 सितंबर, 2023** • दोपहर 2:00 बजे से विवेकानंद चौक, हॉप सर्कस एवं कंपनी बाग में नुक्कड़ नाटक। शाम 5:00 बजे भगत सिंह सर्किल पर भगत सिंह जयंती का आयोजन।
- **29 सितंबर, 2023** • मोती डूंगरी पर सैयद दरबार एवं हनुमान मंदिर से धोली दूब सन्त लालदास मन्दिर होते हुए गांव ठेकड़ा तक।
- **30 सितंबर, 2023** • ठेकड़ा गांव से डेहरा गांव, बाबा चूहड़ सिद्ध दरगाह एवं गांव अमृतबास तक।
- **01 अक्टूबर, 2023** • अमृतबास गांव से मंगलबास गाँव होते हुए हाजीपुर गांव से डढीकर गाँव और निर्वाण वन फाउंडेशन तक।
- **02 अक्टूबर, 2023** • निर्वाण वन फाउंडेशन से रावण देवरा, अखेपुरा होते हुए ज्योतिबा फुले सर्किल से नगर निगम अलवर तक।

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://forms.gle/2B4woS7pZbvCNhcg6

FOLLOW

www.dhaiaakharprem.in
www.facebook.com/dhaiaakharprem
http://www.instagram.com/dhaiaakharprem2023
http://www.twitter.com/dhaiaakharprem
http://www.linkedin.com/company/dhaiaakharprem
http://www.youtube.com/@dhaiaakharprem

आयोजक व सहयोगी संगठन

राजस्थान इप्टा | एडवा | भारत परिवार | जलेस | विजन संस्थान | सृजक संस्थान | सद्भाव मंच | लाइफ सेवर टीम

एटक | सीटू | एम.एम.एस.वी.एस. | एस.एफ.आई.

ढाई आखर प्रेम

National Cultural Jatha

राष्ट्रीय सांस्कृतिक जत्था

प्रेम, एकजुटता एवं आपसी सद्भाव की यात्रा

(28 सितम्बर, 2023 से 30 जनवरी, 2024 तक)

राजस्थान जत्था

28 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2023 तक

राजस्थान जत्था संयोजक - डॉ. सर्वेश जैन
+91 94147 89778
sarveshjain14@gmail.com

केंद्रीय संयोजन दल
+91 98210 43733
dhaiaakharprem@gmail.com

जत्था के पड़ावों का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व

हनुमान मंदिर और सैय्यद दरबार - एक साथ

यह एक अनोखा एवं पवित्र स्थान है। जहां हिंदू और मुस्लिम एक साथ प्रार्थना करते हैं। संकट मोचन वीर हनुमान मंदिर और सैय्यद दरबार एक ही परिसर में हैं, जिनके बीच कोई दीवार नहीं है। गुरुवार को लाउडस्पीकर पर सुबह भजन और शाम को कव्वाली बजती है। कपूर, घी और लोबान की सुगंध का मिश्रण एक साथ समाहित है, जो साझा संस्कृति का प्रमाण है।

स्वामी विवेकानंद

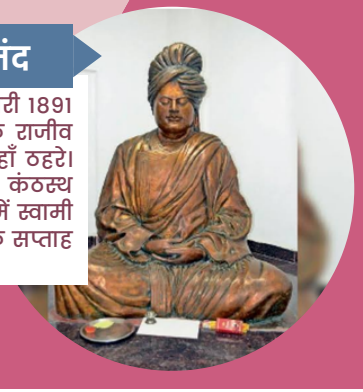

स्वामी विवेकानंद का अलवर से खास नाता रहा है। वे रेल से 25 फरवरी 1891 में एकाएक अलवर स्टेशन पर उतरे और घूमने लगे, फिर आज के राजीव गांधी सामान्य चिकित्सालय में एक बंगाली डॉक्टर गुरु चरण के यहाँ ठहरे। उनके घर पर प्रार्थना सभा, भक्ति गीत गाए जाते। कुछ नौजवानों ने कंठस्थ गीत याद किये और स्वामी जी के साथ गाए। उसी जगह पर वर्तमान में स्वामी विवेकानंद का पैनोरमा बना हुआ है। दूसरी बार स्वामी जी 1897 में एक सप्ताह के लिए अलवर आए।

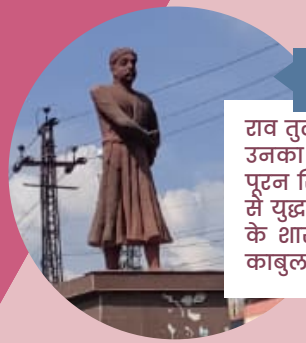

राव तुलाराम

राव तुलाराम 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उनका जन्म 9 दिसंबर 1825 को रेवाड़ी के उपनगर रामपुर में एक अहीर परिवार में पूरन सिंह और ज्ञान कौर के घर हुआ था। अंग्रेजों से भारत को मुक्त करने के उद्देश्य से युद्ध लड़ने के लिए मदद लेने के लिए भारत छोड़ा तथा ईरान और अफगानिस्तान के शासको से मुलाकात की। इसी मध्य 37 वर्ष की आयु में 23 सितंबर 1863 को काबुल में पेचिश से उनकी मृत्यु हो गई। उसी वीर योद्धा की याद में यह सर्किल है।

हसन खां मेवाती पैनोरमा

अमर शहीद राजा हसन खां मेवाती ने 15 मार्च 1527 को खानवा युद्ध में मेवाड़ के राणा सांगा के साथ मिलकर बाबर से युद्ध किया और शहीद हो गए। बाबर ने हसन खां मेवाती को अपने साथ मिलाने के लिए उन्हें इस्लाम का वास्ता दिया और एक लड़ाई में बंधक बनाए गए राजा हसन खां के पुत्र को बिना शर्त छोड़ दिया। लेकिन राजा हसन खां की देशभक्ति के सामने धर्म का वास्ता काम नहीं आया।हसन खां ने कहा कि धर्म भले ही एक हो, किंतु बाबर से युद्ध करना ही होगा। 'बाबरनामे' में हसनखां मेवाती व अलवर के बारे में 9 प्रष्ठों का विवरण है।

राजा भर्तृहरि पैनोरमा

अलवर को अपनी तपोभूमि बनाने वाले राजा भर्तृहरि उज्जैन के राजा और एक महान संस्कृत कवि थे। इन्होंने नीति शतक, श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक लिखे हैं, जिसमें जीवन सम्बंधित उपदेश दिए गए हैं। भर्तृहरि पैनोरमा के अंदर उनके जीवन से जुड़ी तस्वीरें, कलाकृतियां और मूर्तियां हैं। यहां उज्जैन के महाराजा भर्तृहरि के योगीराज भर्तृहरि बनने तक की घटनाओं को दर्शाया गया है।

संत लालदास

लोक संत लालदास का जन्म सन् 1540 ई. में अलवर जिले के धौलीदूब गांव में हुआ था। इनकी आजीविका का साधन लकड़ी और रस्सी बेचना था। संत लालदास ने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म की अच्छाइयों को अपनाकर लोगों को उपदेश दिए और हिंदू -मुस्लिम संस्कृति को साझा किया। संत लाल दास की मृत्यु 108 वर्ष की आयु में सन् 1648 में हुई। मुस्लिम समुदाय के लोग इन्हें पीर कहते हैं। संत लालदास ने आदर्श साधु उसे कहा है, जो स्वयं अपनी जीविका चलाएं, दूसरों पर आश्रित न रहे।

योगी चरण दास

योगी चरण दास का जन्म 19 सितंबर 1703 ई. में गाँव डेहरा, अलवर में हुआ था। इन्होंने अपने साधना परक व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर लोक कल्याण हेतु अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिसमें 17 लघु ग्रंथ प्राप्य हैं। 1782 ईस्वी में 79 वर्ष की अवस्था में योगी चरण दास समाधिस्थ हुए। उनकी समाधि दिल्ली में स्थित है। उनका कहना था कि योग करके (साधना द्वारा) ही योगी हुआ जा सकता है।

बाबा चूहड़ सिद्ध की दरगाह

चूहड़ सिद्ध बाबा का यह स्थान गुंबद और मंदिर दोनों की स्थापत्य कला का संयुक्त रूप है। चूहड़ सिद्ध का जन्म 900 साल पहले रामगढ़ के पास धनेटा गांव में हुआ था। ऐसा मानना है कि बाबा चूहड़ सिद्ध ने सभी गांव वासियों को बिना जात-पात, ऊंच- नीच, संप्रदाय का भेद किए सभी के दुख दर्द दूर किये, प्रकृति की पूजा के साथ ही पशुपालन को संरक्षण दिया और सामाजिक और सद्भाव का संदेश दिया। इसलिए यह स्थान सभी धर्म और संप्रदाय के बीच आस्था का केंद्र बना हुआ है।

निर्वाण वन फाउंडेशन

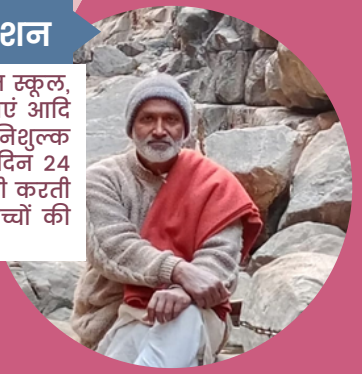

निर्वाण वन फाउंडेशन की स्थापना 2001 में हुई। यह संस्था अद्वैत गार्डन स्कूल, विमुक्त विहार स्कूल और हॉस्टल, सामुदायिक शालाएं, बोधि वृक्ष शालाएं आदि चलाती है, जिसमें गरीब बच्चे, नट समुदाय एवं कंजर बस्ती के बच्चे निशुल्क पढ़ते हैं। इसके अलावा यह संस्था चाइल्ड लाइन 1048 नामक सातों दिन 24 घंटे चलने वाली भारत की पहली निशुल्क दूरभाष सेवा का संचालन भी करती है, जो अनाथ और निराश्रित तथा स्कूल न जा सकने वाले गरीब बच्चों की सहायता करती है। इस संस्था का संचालन निर्वाण बोधि सत्व कर रहे हैं।

रावण देवरा

अलवर शहर से करीब तीन किलोमीटर दूर प्रताप बंध के पास रावण देवरा गांव है। कहा जाता है कि लंका पति रावण ने इस स्थान पर तपस्या की थी। और भी बहुत सी किवदंतियां इसके बारे में है। इस गांव से जैन समाज के तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा व अन्य प्रतिमाएं निकली थीं। जिन्हें अलवर शहर के बीरबल का मोहल्ला स्थित जैन मंदिर में स्थापित किया गया है। इस मंदिर के विषय में लिखा हुआ शिलालेख अलवर के म्यूजियम में भी है।